औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति

पा.सं.	अध्याय शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
6	औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति	परानुभूति, आत्म बोध, समलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान	राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, सर सैयद अहमद खान के कार्यों के महत्व को समझना तथा खालसा निर्माण में अकाली आन्दोलन को जानना

अर्थ

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में शिक्षा का अभाव था तथा महिलाओं की अधीनता मुख्य कारण था जिससे समाज की प्रगति रुकी। भारतीय समाज में सुधारकों ने चाहे वें हिन्दु, मुस्लिम, सिख या पारसी थे, समाज को परिवर्तित किया।

शिक्षा का अभाव

- भारत में शिक्षा उच्च जाति के मुठ्ठी भर पुरुषों तक ही सीमित थी।
- धार्मिक ग्रंथ-वेद संस्कृत में ही लिखे हुए थे जो पुजारी वर्ग के एकाधिकार में थे।
- पुजारी वर्ग ही मंहगे अनुष्ठान, बलि तथा परंपराओं का निर्वाह करवाते थे।

महिलाओं की स्थिति

- अधिकतर महिलाओं का जीवन बहुत कठिन था
- पुरूष का एक से अधिक पत्नी रखना (बहु विवाह) मान्य था
- विधवा को अपने पति की चिता में जबरदस्ती जलने पर विवश किया जाता था (सती प्रथा)
- महिलाओं को सम्पति तथा शिक्षा का कोई अधिकार नहीं था।

जाति व्यवस्था

- हिन्दु समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था
- लोग अपने व्यवसाय के आधार पर विभाजित थे
- ब्राहम्णों को ईश्वर की प्रार्थना और पूजा पाठ का काम था
- क्षत्रिय युद्धों में लगे हुए थे
- वैश्य कृषि व्यापार में लगे हुए थे
- शूद्र ऊपरी तीनों वर्णों की सेवा में लगे हुए थे

सामाजिक तथा धार्मिक सुधार

- बिना धार्मिक सुधारों के सामाजिक सुधार अर्थहीन थे।
- सुधारकों ने सकारात्मक भारतीय मूल्यों तथा पश्चिमी विचारों, जैसे लोकतंत्र तथा समानता के सिद्धांतो, को एक साथ जोड़ा।

शैक्षिक परिदृश्य

- पाठशाला, मदरसे, मस्जिद और गुरूकुलों में पारपंरिक शिक्षा दी जाती थी। संस्कृत, व्याकरण, गणित, धर्म दर्शन जैसे विषय ही पढ़ाये जाते थे। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का अभाव था।

19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधारक

- **राजा राम मोहन राय** ने 1828 में बह्म समाज की स्थापना की।
- **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** ने समाज सुधारों में पूरा जीवन लगा दिया।
- **राम कृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद:** रामकृष्ण परमहंस (1836-1886) ने धर्म की आवश्यकता पर बल दिया तथा स्वामी विवेकानंद (1863-1902) उनके महत्वपूर्ण शिष्य थे।
- **सर सैयद अहमद खान:** उनका विश्वास था कि मुस्लिम के धार्मिक तथा सामाजिक जीवन में सुधार तभी हो सकता है जब वह आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान तथा संस्कृति को अपनाए।
- **ज्योतिराय गोंविदराव फुले** तथा उनकी पत्नी सवित्री बाई ने महाराष्ट्र में निम्न जातियों की महिलाओं को शिक्षित करने के प्रयास किए।
- **न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे** ने धार्मिक सुधारों के लिए पूना सार्वजनिक सभा तथा बम्बई में प्रार्थना समाज की 1867 में स्थापना की।
- **स्वामी दयानंद सरस्वती:** हिन्दुओं में धर्म सुधार हेतु 1875 में उत्तर भारत में आर्य समाज के संस्थापक थे।
- **पंडिता रमाबाई** ने 1881 में आर्य महिला समाज की स्थापना महाराष्ट्र में की। इन्होने महिलाओ के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी तथा बाल विवाह प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई।
- **एनी बेसेंट** थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्या भारत में 1893 में आई
- **मुस्लिम सुधार आंदोलन:** मोहम्दन साक्षरता सोसाइटी कलकता की स्थापना 1863 में अब्दुल लतीफ द्वारा की गई।
- **अकाली सुधार आंदोलन:** महंतों के खिलाफ सशक्त सत्याग्रह 1921 में प्रारम्भ किया गया जिसके फलस्वरूप 1925 में सरकार को नया गुरूद्वारा कानून पारित करना पड़ा।
- **पारसियों में सुधार आंदोलन:** 19वीं सदी के मध्य में नौरोजी फरदोंजी, दादा भाई नौरोजी, एस. एस. बंगाली ने बम्बई में पारसियों में धार्मिक सुधार आंदोलन को प्रारम्भ किया।

भारतीय समाज पर सुधार आंदोलनों का प्रभाव

सभी आंदोलनों ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने तथा जाति प्रथा, सामाजिक एकता, आज़ादी, समानता व भाई चारे के विकास के लिए काम किया। 1872 में पारित कानून ने अंतरजातीय विवाह व अंतर सांप्रदायिक विवाह को मान्यता दी। 1860 में लड़की की विवाह की आयु 10 वर्ष की गई तथा शारदा अधिनियम द्वारा 1929 को विवाह के लिए लड़की की न्यूनतम आयु 14 तथा लड़के की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. भारतीय समाज में प्रगति के रास्ते में क्या रूकावटें थीं?

प्र. राजा राम मोहन राय तथा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर द्वारा समाज सुधार के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन कीजिए।

प्र. मुस्लिम सुधार आंदोलन तथा अकाली सुधार आंदोलन का वर्णन कीजिए।